अद्वेष्टा=द्वेषभाव से रहित; **सर्वभूतानाम्**=सब प्राणियों में; **मैत्रः**=सब का प्रेमी; **करुणः**=दयालु, कृपालु; **एव च**=अवश्य ही; **निर्ममः**=ममतारहित; **निरहंकारः**=मिथ्या अहंकार से शून्य; **सम**=समभाव वाला; **दुःखसुखः**=दुःख-सुख में; **क्षमी**=क्षमावान् (अपराध करने वाले को अभय देने वाला); **संतुष्टः**=हानि-लाभ में सन्तुष्ट; **सततम्**=निरन्तर; **योगी**=भक्ति में तत्पर; **यतात्मा**=मन और इन्द्रियों सहित शरीर को वश में किए हुए; **दृढनिश्चयः**=दृढ़ निश्चय वाला है; **मयि**=मुझ में; **अर्पित**=अर्पण किए हुए; **मनोबुद्धिः**=मन और बुद्धि को; **यः**=जो; **मद्भक्तः**=मेरा भक्त है; **सः मे प्रियः**=वह मेरा प्रिय है।

अनुवाद

जो किसी से द्वेष नहीं करता और सब का निस्वार्थ कृपामय मित्र है, जो ममता और मिथ्या अहंकार से रहित, सुख-दुःख की प्राप्ति में समान और क्षमावान् है तथा जो हानि-लाभ में सदा सन्तुष्ट रहता है, दृढ़ निश्चय सहित भक्तियोग के परायण है और जिसने अपने मन-बुद्धि को मुझ में ही अर्पण कर रखा है, वह मेरा भक्त मुझे प्रिय है।।१३-१४।।

तात्पर्य

शुद्ध भक्तियोग का आगे वर्णन करते हुए श्रीभगवान् अब शुद्धभक्त के दिव्य गुणों का गान करते हैं। शुद्धभक्त किसी भी परिस्थिति में उद्विग्न नहीं होता। वह किसी प्राणी से यहाँ तक कि अपने द्वेषी तक से द्वेष नहीं करता। यदि कोई उससे वैर करे तो वह समझता है कि इसका कारण उसके अपने पिछले पाप हैं; इसलिए विरोध करने की अपेक्षा चुपचाप सब कुछ सहन करना अच्छा है। श्रीमद्भागवत में कथन है—**तत्तेऽनुकम्पां सुसमीक्ष्यमाणो।** भक्त को बड़ी से बड़ी विपत्ति अथवा दुःख की प्राप्ति में भी अपने ऊपर भगवान् की कृपा का दर्शन होता है। वह सदा इस उद्गार से अनुप्राणित रहता है, 'इस दुःख की तुलना में प्रारब्धवश मुझे कहीं अधिक दुःख मिलना था। परन्तु भगवत्कृपा के कारण भाग्य के दुःख का अत्यन्त सीमित अंश ही मुझे भोगना पड़ रहा है।' इस भावना के कारण नाना विपत्तियों से आक्रान्त होने पर भी वह नित्य शान्त, निस्पन्द और धैर्ययुक्त रहता है तथा प्राणीमात्र पर, चाहे वह द्वेषी ही क्यों न हो, कृपा करता है। भक्त **निर्मम** है, अर्थात् देह की अनुकूलता-प्रतिकूलता को महत्त्व नहीं देता; वह पूर्ण रूप से जानता है कि उसका स्वरूप देह से भिन्न है। वह देह को अपना स्वरूप नहीं मानता, इसलिए मिथ्या अहंकार से मुक्त तथा दोनों सुख-दुःख में सम रहता है। अपने अपराधियों को क्षमा का दान करता है और श्रीभगवान् की कृपा से जो कुछ मिले, उसी में सन्तोष मानता है; किसी भी पदार्थ की प्राप्ति के लिए अतिश्रम में प्रवृत्त नहीं होता, अतएव नित्य प्रसन्नचित्त रहता है। श्रीगुरुदेव के उपदेश में निष्ठ होने के कारण वह पूर्ण योगी है और इन्द्रियसंयमी होने से दृढ़ निश्चय को धारण किए हुए है। अतएव किसी भी कुतर्क के द्वारा उसे भक्तियोग के दृढ़ निश्चय से विचलित नहीं किया जा सकता। वह